झारखंड की नदियां

- किसी भी क्षेत्र का अपवाह तंत्र को वहां की धरातलीय आकृति व जलवायु प्रभावित करती है ।

CAREER FOUNDATION

अपवाह प्रणाली को प्रभावित करने वाले कारक

- उस क्षेत्र मे जल की मात्रा
- उस क्षेत्र मे धरती की बनावट
- ढाल की मात्रा
- वनस्पति का घनत्व
- मिट्टी की संरचना

❖ झारखंड मे भी कई छोटी बड़ी नदियां बहती है , जो उपरोक्त कारको से प्रभावित है ।

❖ झारखंड के प्राकृतिक मानचित्र को देखकर यहां के नदियों के जल प्रवाह की स्थिति को समझा जा सकता है।

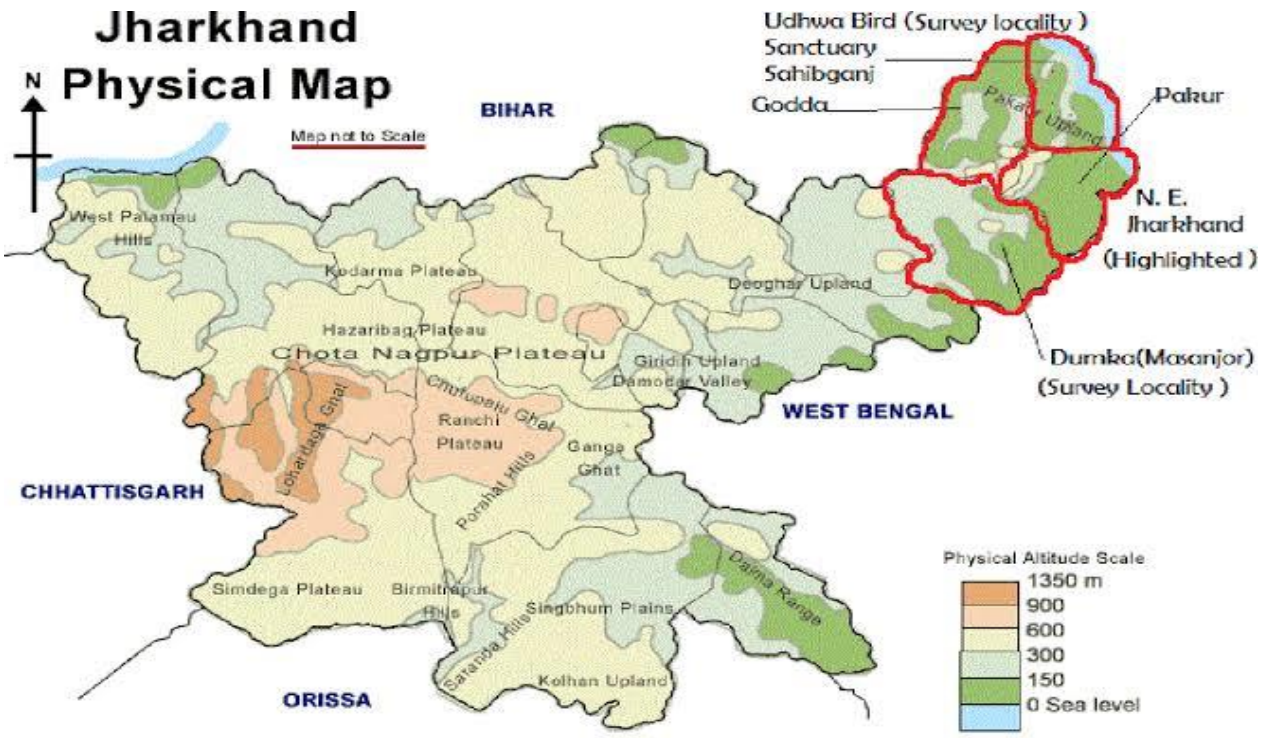

जुनून राष्ट्र सेवा का

झारखंड मे नदियो का प्रवाह इस प्रकार है

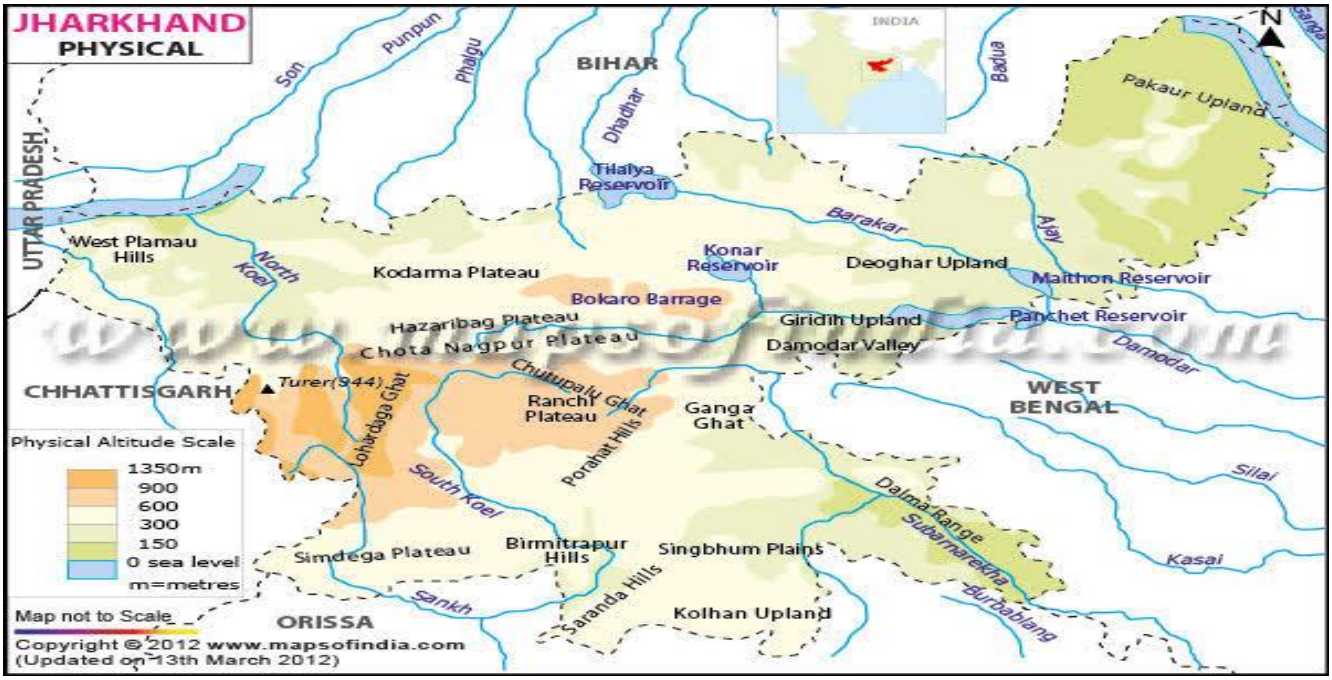

प्रवाह की दिशा के अनुसार झारखंड की नदियों को दो भागो मे वर्गीकृत किया गया है

1) उत्तरवर्ती / गंगावर्ती नदियां – ये नदियां जो पठारी भाग से निकलकर उत्तर की ओर प्रवाहित होती हुई गंगा या उनकी सहायक नदियों मे मिलती है । ये पठार के लगभग आधे उत्तरी एवं पश्चिमी भाग का जल प्रवाहित करती है ।

सोन , उत्तरी कोयल , पुनपुन , फल्गु , सकरी , तथा चानन आदि उत्तरवर्ती नदियां है ।

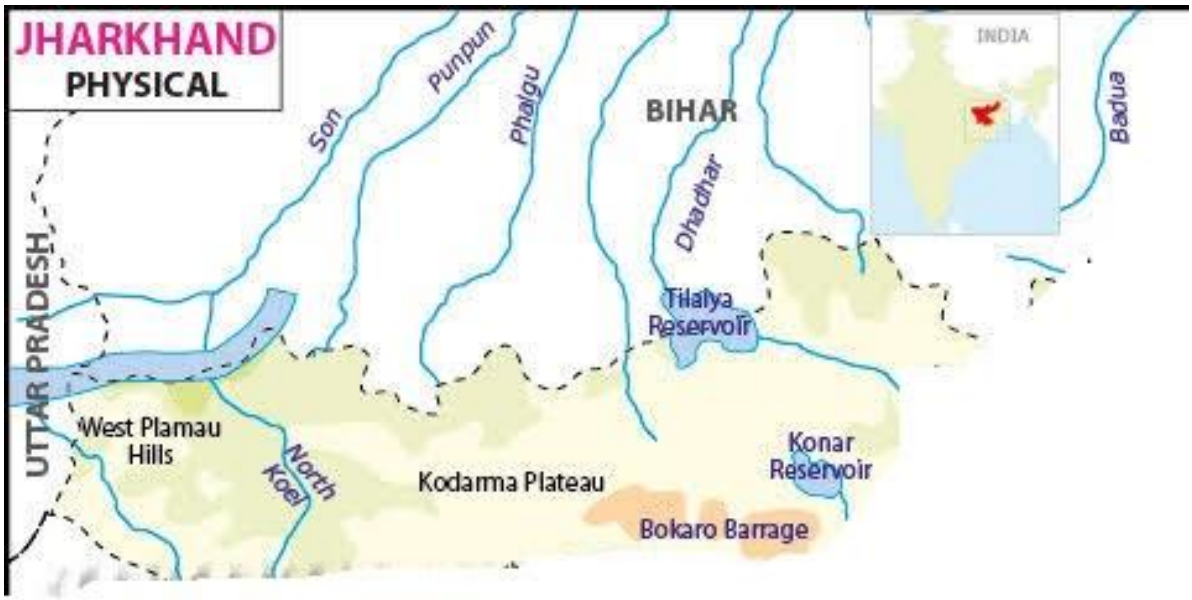

2) दक्षिणवर्ती / पूरबवर्ती नदियां – ये नदियां जो पठार के दक्षिणी भाग से निकलकर पूरब और दक्षिण की ओर प्रवाहित होती है ।

दामोदर , स्वर्णरेखा , मयुराक्षी , गुमानी , ब्राह्मणी , बंसलोई , अजय , द.कोयल , बराकार , शंख आदि दक्षिणवर्ती नदियां है ।

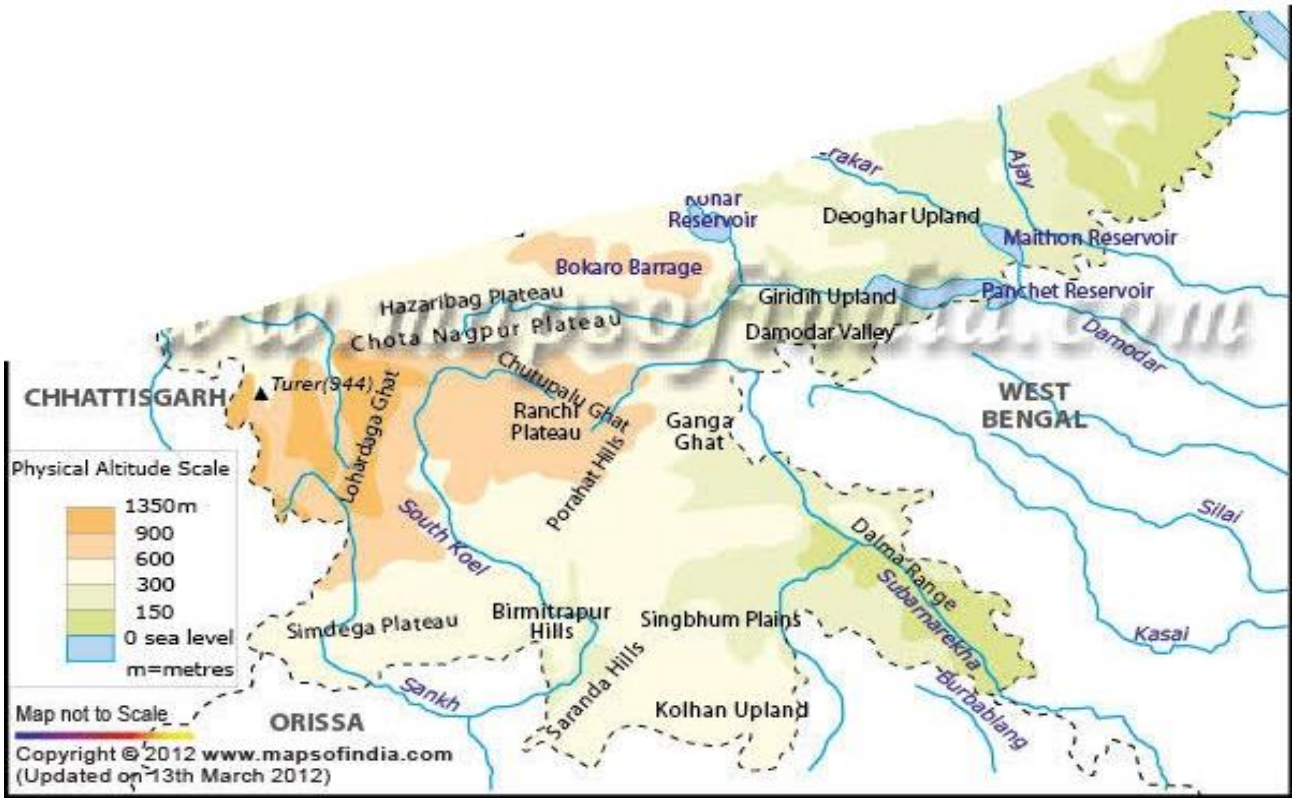

1) उत्तरवर्ती / गंगावर्ती नदियां –

1. सोन नदी

- यह नदी झारखंड के उत्तर–पश्चिमी छोर पर सीमा का निर्माण करती है तथा पलामू की उतरी सीमा बनाती हुई प्रवाहित होती है ।
- सोन नदी का उद्गम / उद्भव मैकाल पवर्त के अमरकंटक नामक पठारी भाग से होता है ।
- सोन नदी को सोन भद्र तथा हिरण्यवाह के नाम से भी पुकारा जाता है ।
- इसका नाम हिरण्यवाह इसमे प्राप्त होने वाले स्वर्ण कण तथा सुनहली रेत के कारण पड़ा है ।
- इसका महत्व झारखंड के लिए केवल सीमा के रूप मे है।
- यह उत्तर–पश्चिमी सीमा 24 किमी. के लिए बनाती है ।
- यह नदी भवनाथपुर थाना क्षेत्र के पहाड़ी के उत्तरी छोर और कैमूर पहाड़ी की खड़ी ढाल के बीच प्रवाहित होती है।
- सोन नदी का झारखंड मे प्रवाह क्षेत्र – गढवा एवं पलामू
- मुहाना – गंगा नदी (पटना)
- सहायक नदी – उत्तरी कोयल

CAREER FOUNDATION

रोचक तथ्य :– कहा जाता है कि सोन और नर्मदा का उद्भव ब्रह्मा के आंसू के दो बुंदो का हुआ है । जो अमरकंटक पठार की दो ढालो पर गिर पड़ी और दोनो विपरित दिशा मे नदी के रूप मे प्रवाहित हुई ।

2. उत्तरी कोयल

- उद्गम/उद्भव – रांची के पठार का मध्य भाग
- मुहाना – सोन नदी
- प्रवाह क्षेत्र – गढ़वा , पलामू , लातेहार (255 किमी.)
- सहायक नदी – औरंगा एवं अमानत

CAREER FOUNDATION

औरंगा नदी –

- औरंगा नदी का उद्गम रांची जिला के सोहिदा गांव से होती है और 80 किमी. दूरी तय कर उत्तरी कोयल मे मिल जाती है ।

अमानत नदी –

- हजारीबाग जिले से निकलकर डाल्टनगंज के पास उतरी कोयल मे मिल मिल जाती है ।

बूढ़ा नदी –

- यह महुआडांड़ क्षेत्र से निकलकर सेरेंगदाग पाट के दक्षिण मे उतरी कोयल मे मिल जाती है । इसी नदी के द्वारा बूढाघाघ जलप्रपात (450 फीट या 137 मीटर) का निर्माण होता है, जो झारखंड का सबसे ऊंचा जलप्रपात है।

बूढाघाघ जलप्रपात (लातेहार)

कन्हर नदी –

- कन्हर नदी झारखंड के उत्तर -पश्चिम क्षेत्र मे गढवा के दक्षिण –पश्चिम सीमा का निर्माण करती हुई उत्तर की ओर प्रवाहित होती है । उसके बाद पश्चिम की ओर मुड़कर उत्तर प्रद्रेश मे सोन नदी मे मिल जाती है ।
- उद्गम – सरगुजा (छत्तीसढ़)
- यह नदी छत्तीसढ़ से बहती हुई गढवा के भंडरिया प्रखंड से होते हुए झारखंड मे प्रवेश करती है तथा रंका एवं धुरकी प्रखंड के पश्चिमी सीमा मे बहते हुए पश्चिम की ओर मुड़ जाती है ।

3. पुनपुन नदी

- उद्गम – छोटानागपुर का पठार (पलामू)
- हिंदु लोग इसे पवित्र नदी मानते है ।
- पुनपुन नदी को कीक्कट तथा बमागधी नाम से भी जाना जाता है ।
- झारखंड मे प्रवाह – पलामू एवं चतरा
- पुनपुन तथा इसकी सहायक नदियों का उद्गम से ही झारखंड का संबंध है ।
- मुहाना – गंगा नदी

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

4. फल्गु नदी

- उद्गम – छोटानागपुर पठार का उत्तरी भाग
- मोहाने , निरंजना तथा लीलाजन नदियों के छोटे–छोटे सरिताओं के मिलने से फल्गु नदी की मुख्य धारा बनती है
- फल्गु नदी को अंतःश्लीला उपनाम से भी जाना जाता है।

- गया के निकट इसकी चौड़ाई सबसे अधिक है ।

नोट – पितृपख मेला मे पींड दान के लिए विख्यात

4. सकरी नदी

- उद्गम – उत्तरी छोटानागपुर का पठार
- यह नदी हजारीबाग , पटना , गया और मुगेंर जिलो से होकर प्रवाहित होती है ।
- यह झारखंड से निकलकर उत्तर–पूर्व मे प्रवाहित होती हुई किउल और मोरहर नदियों के साथ मिलकर गंगा के ताल क्षेत्र मे जाकर मिल जाती है ।
- रमायण मे इस नदी को सुमागधी कहा गया है ।
- मार्ग बदलने मे कुख्याता है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

4. चानन/पंचाने नदी

- उद्गम – छोटानागपुर का पठार
- यह नदी पांच जलधाराओं के मेल से विकसित हुई है , इसलिए इसे पंचानन कहते है । ये पांच जलधाराएं छोटानागपुर के पठार से निकलती है ।
- यह सकरी की सहायक नदी है ।

2) दक्षिणवर्ती / पूरबवर्ती नदियां

TION
जुनून राष्ट्र सेवा का

1. दामोदर नदी

- उद्गम – लातेहार का टोरी क्षेत्र (छो. नागपुर का पठार)
- झारखंड की सबसे बड़ी नदी
- कुल लंबाई – 592 किमी.
- झारखंड मे लंबाई – 290 किमी.
- झारखंड की सबसे प्रदूषित नदी
- उपनाम – देव नदी , बंगाल का शोक

- सहायक नदियां – बराकर , बोकारो , कोनार , जमुनिया, कतरी
- झारखंड मे प्रवाह – लातेहार , रामगढ़ , हजारीबाग , गिरीडीह , बोकारो , धनबाद ,

नोट :– हजारीबाग से लेकर बर्द्धमान जिले तक दामोदर की धारा काफी तेज रहती है ।

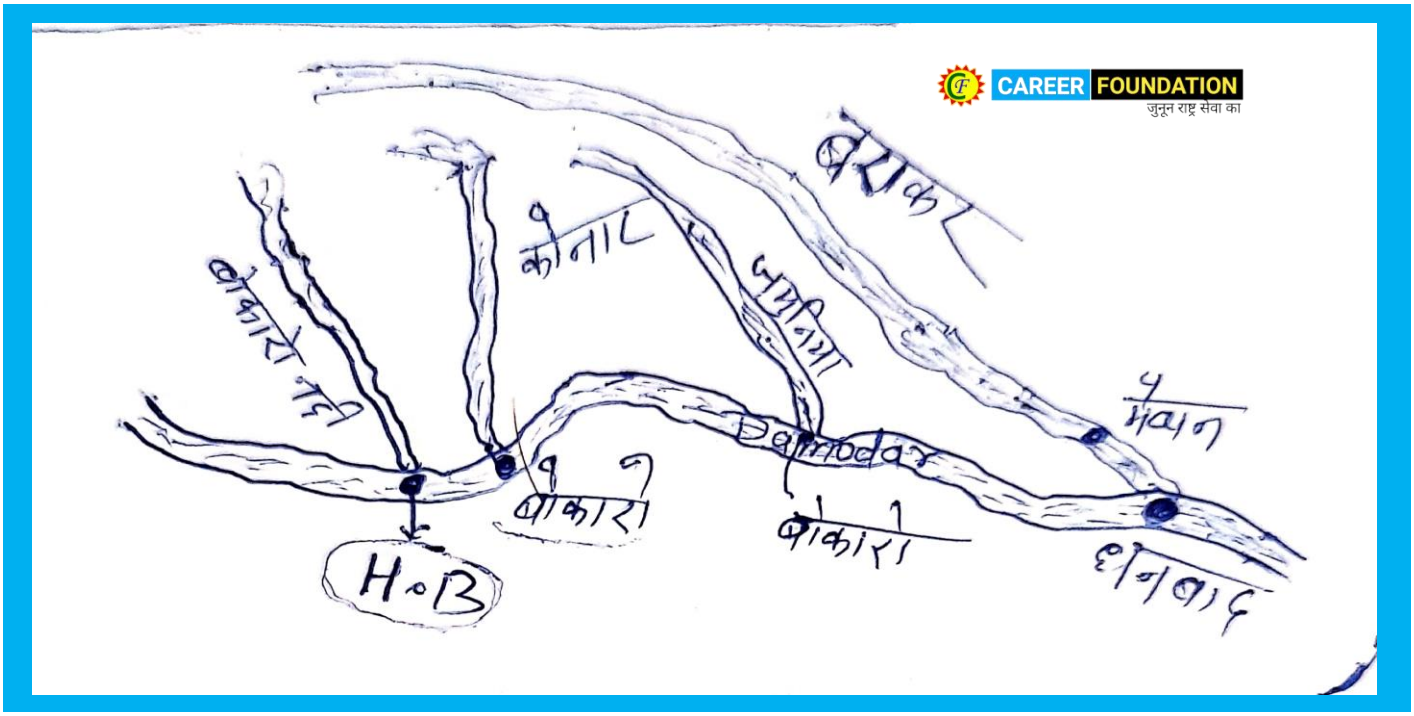

नोट :– संयुक्त राज्य अमेरिका के टेनेसी घाटी की तर्ज पर यहाँ दामोदर घाटी प्रोजेक्ट की रचना जवाहर लाल नेहरू के कार्यकाल मे की गयी और इसका परिणाम यह हुआ कि इसके

बाढ़ रूक गये और नयी–नयी सिंचाई परियोजनाएँ तथा पनबिजली उत्पादन स्थापित हुए । अब यह नदी अभिशाप नही वरदान बन चुकी है । जिस पर झारखंड और बंगाल को ही नही पूरे भारत को नाज है ।

- दामोदर नदी का क्षेत्र भारत के समृद्ध क्षेत्र है । यहां कोयला , चुना, लोहा , मैग्नीज जैसे महत्वपूर्ण खनिज उपलब्ध है । इसके आस पास कई औद्योगिक क्षेत्र है। इसमे मैथन , पंचेत , तिलैया आदि स्थानो पर बांध बनाये गये है । इसके अलावा इससे ताप विद्युत , पनबिजली तथा सिंचाई परियोजनाएं चलायी जा रही है ।

CAREER FOUNDATION

2. बराकर नदी

- उद्गम – पदमा (हजारीबाग)
- प्रवाह क्षेत्र – हजारीबाग , कोडरमा , गिरीडीह , धनबाद
- मुहाना – दामोदर नदी (धनबाद)
- तिलैया डैम तथा मैथन डैम इसी नदी पर स्थित है ।
- इस नदी का उल्लेख बौद्ध एवं जैन धर्मग्रंथो मे मिलता है ।

- गिरीडीह के पास इस नदी के तट पर बराकर नामक स्थान है , जहाँ जैन मंदिर बने है ।
- मैथन के पास बराकर नदी के तट पर कल्याणेश्वरी नामक देवी का मंदिर है ।

3. स्वर्णरेखा नदी

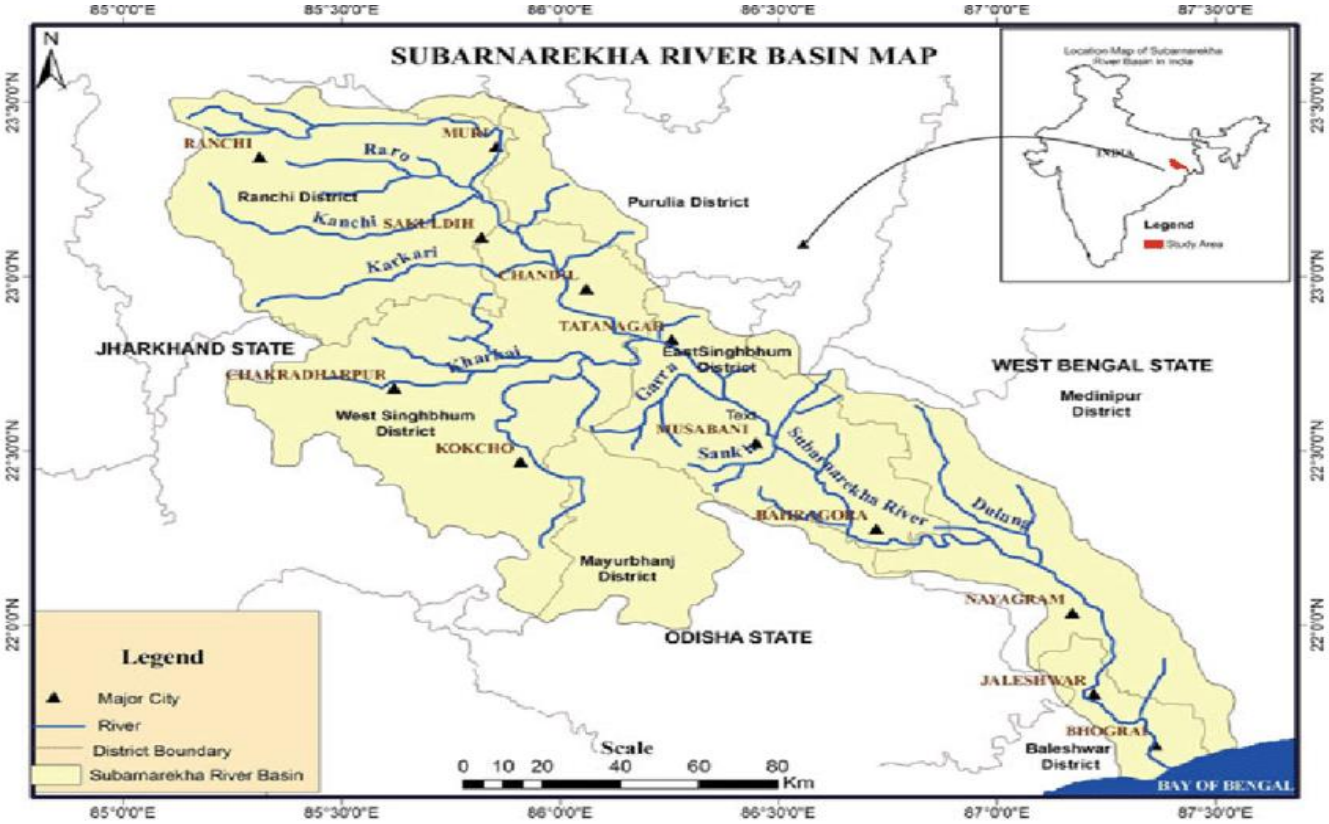

- इस नदी का उद्गम दक्षिणी छोटानागपुर के पठारी भूभाग मे रांची जिले के नगड़ी गाँव के उत्तरी छोर से होता है । इसी गाँव के एक छोर से दक्षिणी कोयल का उद्गम होता है ।
- इस नदी मे स्वर्णकण पाये जाते है ।
- पठारी भाग की कड़ी चट्टानो वाले प्रदेश से प्रवाहित होने के कारण स्वर्णरेखा तथा इसकी सहायक नदियां गहरी घाटियां तथा जलप्रपात बनाती है ।
- यह झारखंड की इकलौती नदी है , जो सीधे बंगाल की खाड़ी मे मिलती है और डेल्टा का भी निर्माण करती है ।
- प्रवाह क्षेत्र – रांची एवं सिंहभूम
- **स्वर्णरेखा की प्रमुख सहायक नदियां**

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

खरकई , राढू , काँची , संजय , करकरी , कसाई

- स्वर्णरेखा तथा उसकी सहायक नदियां द्वारा निर्मित जलप्रपात
  1. हुंडरू जलप्रपात – स्वर्णरेखा नदी – रांची
  2. जोन्हा/गौतम धारा – राढू नदी
  3. दशम जलप्रपात – काँची नदी

4. दक्षिणी कोयल नदी

- उद्गम – रांची का नगड़ी गांव
- रांची से निकलकर पश्चिम की ओर प्रवाहित होती हुई लोहरदगा से 8 किमी. उत्तर–पूर्व मे दक्षिण की ओर मुड़ जाती है तथा गुमला जिला होते हुए सिंहभूम मे प्रवेश करती है । अंततः यह उड़िसा मे जाकर शंख नदी मे मिल जाती है ।
- इसकी सबसे बड़ी सहायक नदी कारो नदी है , जिसमें कोयल कारो परियोजना का निर्माण किया गया है ।

CAREER FOUNDATION
जन राष्ट्र सेवा का

5. शंख नदी

- उद्गम – चैनपुर (गुमला) (पाट क्षेत्र के दक्षिणी छोर से)
- मुहाना – दक्षिणी कोयल
- इस नदी पर राजाडेरा के पास सदनीघाघ जलप्रपात स्थित है । जिसकी ऊंचाई 200 फीट है ।

6. अजय नदी

- उद्गम – मुंगेर (बिहार)
- झारखंड मे अपवाह क्षेत्र – जामताड़ा (प्रवेश) , देवघर एवं दुमका
- सहायक नदी – पाथरो एवं जयन्ति
- मुहाना – भागीरथी नदी (पश्चिम बंगाल)
- पाथरो नदी हजारीबाग से निकलती है , जबकि जयन्ति गिरिडीह जिले से निकलती है ।

7. मयूराक्षी / मोर नदी

- उद्गम – त्रिकुट पहाड़ी (देवघर)
- प्रवाह क्षेत्र – देवघर ,दुमका , गोड्डा , साहेबगंज
- इसे बिहार मे मोतीहारी के नाम से जानते है ।
- इसका दूसरा नाम मोराँखी भी है ।
- सहायक नदी – धोवाई , टिपरा , पुसरों , भामरी , मूनबिल , सिध , दउना

- मुहाना – गंगा नदी (बंगाल मे सैंथिया रेलवे स्टेशन के निकट)
- झारखंड की एकमात्र नौगम्य नदी

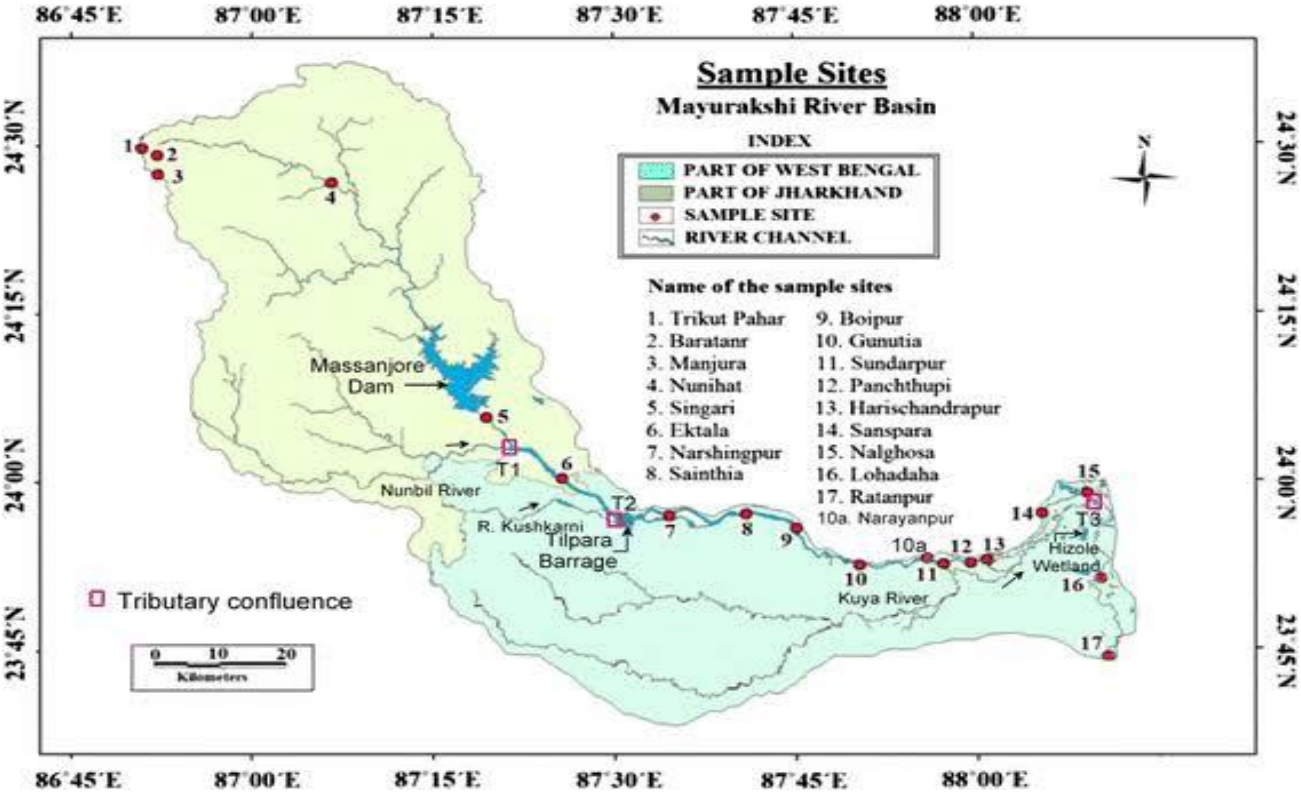

7. ब्राह्मणी नदी

- उद्गम – दुधवा पहाड़ी का पश्चिमी भाग (दुमका)
- मुख्य सहायक नदी – गुमरो और ऐरो
- यह नदी दामिन–ए–कोह क्षेत्र से प्रवाहित होती है ।
- मुहाना – गंगा नदी

8. बांसलोई नदी

- उद्गम – बांस पहाड़ी (गोड्डा)
- यह बांस पहाड़ी से निकलकर पूर्व की ओर बहती हुई दुमका जिले की उत्तरी सीमा बनाती है और उसे गोड्डा और पाकुड़ से अलग करती है ।
- यह दुमका मे पंचवारा ''पास'' से गुजरती है ।
- मुहाना – गंगा नदी

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

8. गुमानी नदी

- उद्गम – राजमहल की पहाड़ी
- यह संथाल परगना के सबसे उत्तरी छोर मे प्रवाहित होने वाली नदी है ।
- सहायक नदी – मेरेल नदी ,
- मुहाना – गंगा नदी (पश्चिम बंगाल)

8. गंगा नदी

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- यह नदी झारखंड का सिर्फ एक जिला साहेबगंज से होकर गुजरती है ।
- यह गंगा नदी झारखंड की सीमा रेखा को तेलियगढी के कुछ मील पश्चिम मे छूती है तथा उधवा नाला से आगे चलकर सीमा से हट जाती है ।

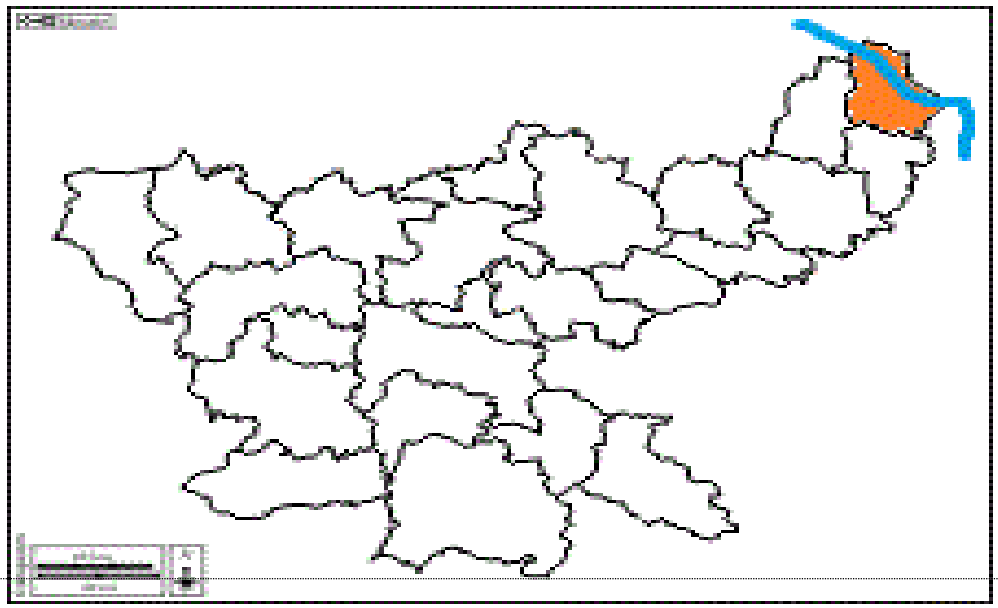

रोचक तथ्य

झारखंड के प्रवाह तंत्र को गौर से देखने पर पता चलता है कि इसके उत्तर–पश्चिम कोने मे सोन नदी है तो दक्षिण–पूर्व छोर मे स्वर्णरेखा नदी दोनो ही सोना उगलती है । ये हमारी आर्थिक पहचान है। दूसरी ओर उत्तर–पूर्व कोने मे गंगा नदी जबकि दक्षिण–पश्चिम कोने मे शंख नदी है , यह हमारी सांस्कृतिक पहचान है ।

झारखंड के नदियों की विशेषता

CAREER FOUNDATION
युवा राष्ट्र सेवा का

1. झारखंड की लगभग सभी नदियां बरसाती है । (सोन नदी को छोड़कर)

2. उत्तर की ओर प्रवाहित होने वाली नदियां पठारी भाग से मैदानी भाग मे उतरने पर मंद गति से प्रवाहित होने लगती है। जबकि दक्षिण की ओर प्रवाहित होने वाली नदियां अपेक्षाकृत दूर तक तेज गति से बहती है , जिससे कटाव भी अधिक होता है ।

3. उत्तर बिहार की तरह झारखंड की नदियों मे मार्ग बदलने की प्रवृति बहुत कम पायी जाती है ,क्योंकि ये कठोर चट्टानी क्षेत्र से होकर प्रवाहित होती है ।

4. झारखंड की नदियों का प्रवाह पत्र भू–आकृति के द्वारा नियंत्रित है । जैसे – दामोदर नदी विभ्रंस घाटी से प्रवाहित होने को विवश है ।

5. झारखंड की नदियां गहरी घाटी का भी निर्माण करती है ।

6. यहाँ की नदियां नाव चलाने योग्य नही है ।(मयूराक्षक्षी को छोड़कर)

7. झारखंड की अधिकत्तर नदियां जल प्रपात का निर्माण करती है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का